पानी है तभी जिंदगानी है

डॉ. संजय कुमार शर्मा
रा.ज.सं., गुवाहटी

सौर मंडल के ग्रहों में केवल पृथ्वी ही है जो जल से भरपूर है। इस जल का एक हिस्सा भी अन्य ग्रहों को प्राप्त नहीं हुआ।

वैज्ञानिक खोजों के आधार पर जीव की उत्पत्ति जल के अंदर ही हुई है। विकास की श्रृंखला में एक कोशिका से बहुकोशीय जीवों की उत्पत्ति हुई है। इन जीवों के जीवन का मुख्य आधार जल ही है। जल न हो तो जीवों का अस्तित्व भी खो जाएगा और पृथ्वी की स्थिति भी सौरमंडल के अन्य ग्रहों के समान हो जाएगी।

हम भाग्यशाली हैं कि हमने ऐसी पृथ्वी पर जन्म लिया है जहाँ हमें जीवन का आधार जल मिला। जल पौधों को सींचता है जिनसे हमें प्राणदायिनी ऑक्सीजन वायु प्राप्त होती है। जल बिना पृथ्वी वनस्पतियों से विहीन हो जाएगी। तब हमारे जीवन के मुख्य आधार जल और वायु के अभाव में जीवों का अस्तित्व भी पृथ्वी पर नहीं रहेगा। अर्थात पृथ्वी के श्रृंगार का मुख्य आधार तो जल ही हुआ न! हम तो कल्पना में भी नहीं सोच सकते कि जल के बिना पृथ्वी पर जीवों का अस्तित्व रहेगा।

यही कारण है कि प्राचीन काल से जल की महिमा का बखान होता आया है। पौराणिक कथाओं में और भारतीय संस्कृति में जल को विशेष स्थान दिया गया है। उदाहरणतया कई रीति–रिवाज और पर्व जल से संबंधित हैं। उत्तराखंड में नव वधू विवाहोपरांत जब अपने पति के नए गाँव आती है तो वहाँ के पोखर अथवा जल के अन्य स्रोत में दीपक जलाकर अपने सुखमय जीवन की प्रार्थना करती है।

पृथ्वी पर प्रकृति ने हमें भरपूर जल प्रदान किया है। तालाब, झरने, नदियाँ, समुद्र जल से भरपूर हैं और यही है पृथ्वी के "गुल्लक" जिन्हें प्रकृति वर्षा–ऋतु में जल से भर देती है, परन्तु आधुनिक युग में मानव की मानसिकता इतनी बदल गई है कि वह अपनी सुख–सुविधाओं के लिए इन पृथ्वी के गुल्लकों को पाटकर उन पर बड़ी–बड़ी इमारतें खड़ी करने में लगा है। बिना इस बात पर विचार किए कि वर्षा का पानी कहाँ एकत्र होगा। घनी आबादी वाले शहरों में यही बाढ़ का कारण बनता जा रहा है।

दूसरी तरफ मानव वृक्षों से भरे जंगलों को काट–काट कर घर बनाने में लगा है बिना यह सोचे कि वृक्ष बाढ़ को रोकने और वर्षा के होने में सहायक होते हैं। किसी ने सच ही कहा है, स्वयं अपने पैरों पर "कुल्हाड़ी मारना"।

प्रदूषण ने तो जल के परंपरागत स्रोतों को भी दूषित कर दिया है। औद्योगिक प्रगति के साथ–साथ हानिकारक कचरा और रसायन बड़ी मात्रा में इन जल स्रोतों में मिलाए जा रहे हैं। प्रदूषित जल और वायु के बीच पनपने वाली वनस्पति और जीने वाले प्राणी भी इनसे अत्यधिक प्रभावित हो रहे हैं।

वैज्ञानिक प्रगति के नाम पर मनुष्य प्रकृति को अपने वश में करने में जुटा है। परन्तु उसकी यह कोशिश व्यर्थ हो जाती है जब वह देखता है कि प्राकृतिक प्रकोपों से पल–भर में पृथ्वी

पर तबाही मच जाती है। बाढ़, सुनामी, चक्रवात, भूकंप ऐसी ही कुछ प्राकृतिक आपदाएँ जन्म लेती हैं।

देश का कितना दुर्भाग्य है कि स्वाधीनता के दशकों बाद भी किसान को सिंचाई की पर्याप्त सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं। बड़े–बड़े आलीशान भवनों के निर्माण की अपेक्षा सिंचाई की योजनाएँ बनाना और क्रियान्वित करना अति आवश्यक है।

अभी भी समय है मनुष्य यदि जल जैसी जीवनदायिनी संपदा का उचित उपयोग करे और आने वाली पीढ़ियों को जल के संकटों से बचाए। रहीम के इस दोहे को हमें नहीं भूलना चाहिए –

"रहीमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून ।
पानी गए न ऊबरे, मोती, मानस, चून"।।